

७. खुला आकाश

(पूरक पठन)

— कुँवर नारायण

अंदर की दुनिया

हमारे अंदर की दुनिया बाहर की दुनिया से कहीं ज्यादा बड़ी है। हम उसका विस्तार नहीं करते। बाहर की अपेक्षा उसे छोटा करते चले जाते हैं और उसे बिलकुल निर्जीव कर लेते हैं। आजादी, पूरी आजादी, अगर कहीं संभव है तो इसी भीतरी दुनिया में ही, जिसे हम बिलकुल अपनी तरह समृद्ध बना सकते हैं—स्वार्थी अर्थों में सिर्फ अपने लिए ही नहीं, निःस्वार्थी अर्थों में दूसरों के लिए भी महत्त्व रखता है और स्वयं अपने लिए तो विशेष महत्त्व रखता ही है।

— १० मार्च १९९८

मकान पर मकान

जिस गली में आजकल रहता हूँ—वहाँ एक आसमान भी है लेकिन दिखाई नहीं देता। उस गली में पेड़ भी नहीं हैं, न ही पेड़ लगाने की गुंजाइश ही है। मकान ही मकान हैं। इतने मकान कि लगता है मकान पर मकान लदे हैं। लंद-फंद मकानों की एक बहुत बड़ी भीड़, जो एक सँकरी गली में फँस गई और बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है। जिस मकान में रहता हूँ, उसके बाहर झाँकने से 'बाहर' नहीं सिर्फ दूसरे मकान और एक गंदी व तंग गली दिखाई देती है। चिड़ियाँ दिखती हैं, लेकिन पेड़ों पर बैठी या आसमान में उड़ती हुई नहीं। बिजली या टेलीफोन के तारों पर बैठी, मगर बातचीत करती या घरों के अंदर यहाँ—वहाँ घोंसले बनाती नहीं दिखतीं। उन्हें देखकर लगता मानो वे प्राकृतिक नहीं, रबड़ या प्लास्टिक के बने खिलौने हैं, जो शायद ही इधर—उधर फुदक सकते हों या चूँ—चूँ की आवाजें निकाल सकते हों।

मैं ऐसी सँकरी और तंग गली में, मकानों की एक बहुत बड़ी भीड़ से बिजली या टेलीफोन के तारों से उलझे आसमान से एवं हरियाली के अभाव से जूझते अपने मुहल्ले से बाहर निकलने की भारी कोशिश में हूँ।

— १० मार्च १९९८

सही साहित्य

सही और संपूर्ण साहित्य वह है, जिसे हम दोनों आँखों से देखते हैं—सिर्फ बाई या सिर्फ दाई आँख से नहीं।

— ८ अगस्त, १९९८

परिचय

जन्म : १९२७, फैजाबाद (उ.प्र.)

मृत्यु : २०१७, लखनऊ (उ.प्र.)

परिचय : 'नई कविता' आंदोलन के सशक्त हस्ताक्षर कुँवर नारायण की मूल विधा कविता रही है। इसके अलावा आपने कहानी, लेख, समीक्षा, सिनेमा, रंगमंच आदि कलाओं पर भी लेखनी चलाई है। आपकी कविता-कहानियों का कई भारतीय भाषाओं और विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है। आपको भारतीय साहित्य जगत का सर्वोच्च सम्मान 'ज्ञानपीठ' भी प्राप्त हुआ है।

प्रमुख कृतियाँ : 'चक्रव्यूह', 'तीसरा सप्तक', 'परिवेश', 'हम-तुम', 'आत्मजयी', 'कोई दूसरा नहीं', 'इन दिनों' आदि।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत डायरी विधा में कुँवर नारायण जी ने जीवन के संघर्ष, साहित्य, आत्मचिंतन, जीवनक्रम आदि पर अपने विचार स्पष्ट किए हैं। इस पाठ में आपका मानना है कि हमें दूसरों से वाद-विवाद न करके स्वयं से संवाद करना चाहिए।

जानें खुद को

बिलकुल चुपचाप बैठकर सिर्फ अपने बारे में सोचें। कोशिश करें कि 'दूसरे' या 'सब' कहीं भी उस आत्मचिंतन के बीच में ना आएँ। इससे दो फायदे होंगे। एक तो हम अपने को जान सकेंगे कि हम स्वयं क्या हैं, जो दूसरों के बारे में सब कुछ जानने का दंभ रखते हैं। दूसरे, हमारे उस हस्तक्षेप से दूसरों की रक्षा होगी, जिसके प्रतिक्षण मौजूद रहते वे अपने बारे में न तो संतुलित ढंग से सोच पाते हैं, न सक्रिय हो पाते हैं। दूसरों की सोच-समझ में भी उतना ही भरोसा रखें, जिनमें हमें अपनी सोच-समझ में है।

हर एक के प्रति हमारे मन में सहज सकारात्मक स्वीकृति का भाव होना चाहिए। दूसरा अन्य नहीं, अंतमय है, हमारे ही प्रतिरूप, हमसे अलग या भिन्न नहीं।

- १२ नवंबर १९९८

सिर्फ मनुष्य होते ...

कुछ लोग सोचते होंगे कि आखिर यह क्यों होता है, कैसे होता है कि आदमियों में ही कुछ आदमी बाघ, भेड़िये, लकड़बग्घे, साँप, तेंदुए, बिच्छू, गोजर वगैरह की तरह होते हैं और कुछ आदमी गायें, बकरी, भेड़ तितली वगैरह की तरह ? ऐसा क्यों नहीं होता कि जिस तरह सारे बाघ केवल बाघ होते हैं और कुछ नहीं, या जैसे सारी गायें केवल गायें होती हैं और कुछ नहीं, उसी तरह सारे मनुष्य केवल मनुष्य होते और कुछ नहीं...।

- ७ अगस्त १९९९

लुका-छिपाकर जीना

मुझे जीवन को सहज और खुले ढंग से जीना पसंद है। चीजों को लुका-छिपाकर, बातों और व्यवहार को रचा बसाकर जीना सख्त नापसंद है। वह चारित्रिक बेईमानी है, जिसे हम व्यवहार कुशलता का नाम देते हैं। इसके पीछे आत्मविश्वास की कमी झलकती है कि कहीं लोग हमारी असलियत को न जान जाएँ।

आखिर वह असलियत इतनी गंदी और धूर्त क्यों हो कि उसे छिपाना जरूरी लगे।

- ४ जनवरी २००१

जीने का अर्थ

बुढ़ापे का केवल यही अर्थ नहीं कि जीवन के कुछ कम वर्ष बचे हैं; यह तथ्य तो जीवन के किसी खंड पर भी लागू हो सकता है- बचपन, यौवन बुढ़ापा...। खास बात है, जो भी वर्ष बचे हैं, जब तक जीवित और चैतन्य हूँ, जिंदगी को क्या अर्थ दे पाता हूँ, या अपने लिए उससे क्या पाता हूँ, ऐसा कुछ जिसका सबके लिए कोई महत्त्व है। लगभग इसी अर्थ में मैं साहित्यिक चेष्टा और जीवन चेष्टा को अपने लिए अविभाज्य पाता हूँ।

संभाषणीय

‘कंप्यूटर ज्ञान का महासागर’
विषय पर तर्कपूर्ण चर्चा
कीजिए।

लेखनीय

महानगरीय/ग्रामीण दिनचर्या
के लाभ तथा हानि के बारे में
अपने अनुभव के आधार पर
लिखिए।

७५ का हो रहा हूँ—यानी, जीने के लिए अब कुछ ही वर्ष बचे हैं लेकिन जीना बंद नहीं हो गया है। यह अहसास कि मृत्यु बहुत दूर नहीं है, उम्र के किसी भी मोड़ पर हो सकती है। ऐसा हुआ भी है मेरे साथ। तब हो या अब, यह सवाल अपनी जगह बना रहता है कि जीवन को किस तरह जिया जाए—सार्थकता से अपने लिए या दूसरों के लिए ...।

— २३ जनवरी २००२

दिल्ली में रहना

दिल्ली शहर में घर ढूँढ़ रहा हूँ। शहर, जैसे एक बहुत बड़ी बस! सवारियों से लंद-फंद, हर वक्त चलायमान। दिल्ली में रहने का मतलब कहीं पायदान बराबर दो कमरों में दो पाँव टिकाकर किसी तरह लटक जाओ और लटके रहो उम्र भर। जिंदगी का मतलब बस इतना ही कि जब तक बन पड़े लटके रहो, फिर धीरे-से कहीं भीड़-भाड़ में गिर जाओ ...।

— १२ जून २००३

बहाने निकालना

जो हम शौक से करना चाहते हैं, उसके लिए रास्ते निकाल लेते हैं। जो नहीं करना चाहते, उसके लिए बहाने निकाल लेते हैं...।

— जनवरी २००६

अपने से बहस

बहस दूसरों से नहीं, अपने से करनी चाहिए उससे सच्चाई हाथ लगती है। दूसरों को सिर्फ सुनना चाहिए; दूसरों से बहस से केवल झगड़ा हाथ लगता है।

चीजों की गुलामी

कुछ दिनों पहले एक कंप्यूटर ने मुझे चालीस हजार रुपयों में खरीदा है! आज-कल उसकी गुलामी में हूँ। उसके नखरों को सिर झुकाकर झेलने में ही अपना कल्याण देख रहा हूँ। उसका वादा है कि एक दिन वह मुझे लिखने-पढ़ने की पूरी आजादी देगा। फिलहाल उसकी एकनिष्ठ सेवा में ही मेरा उज्ज्वल भविष्य है।

इसके पहले एक मोटर मुझे भारी दामों में खरीद चुकी है। उसकी सेवा में भी हूँ। दरअसल, चीजों का एक पूरा परिवार है जिसकी सेवा में हूँ। आदमी का स्वभाव नहीं बदलता या बहुत कम बदलता है। गुलामी करना-करवाना उसके स्वभाव में है। सिर्फ तरीके बदले हैं, गुलामी की प्रवृत्ति नहीं। हजारों साल पहले एक आदमी मालिक होता था और उसके दरजनों गुलाम होते थे। अब हर चीज के दरजनों गुलाम होते हैं।

— ३० सितंबर २०१०

(‘दिशाओं का खुला आकाश’ से)

— ० —



शरद जोशी लिखित ‘अतिथि तुम कब जाओगे,’ हास्य व्यंग्य कहानी पढ़िए तथा सुनाइए।



‘घर की बालकनी/आँगन में सेंद्रिय पद्धति से पौधे कैसे उगाए जाते हैं’, इसके बारे में आकाशवाणी/दूरदर्शन पर सुनिए और सुनाइए।

शब्द संसार

सँकरी स्त्री. वि. (हिं.) = पतली, कम चौड़ी,
तंग

गोजर पुं.सं. (हिं.) = कनखजूरा

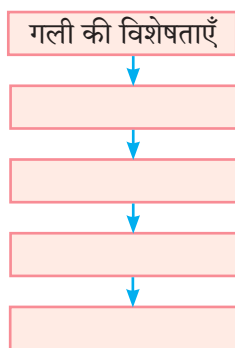
लकड़बग्घा पुं.सं. (हिं.) = भेड़िये की जाति का
एक पशु

चलायमान वि. (सं.) = चलता हुआ, चंचल

स्वाध्याय

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

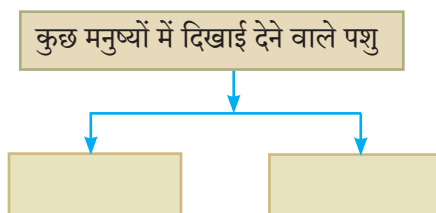


(२) कृति पूर्ण कीजिए :

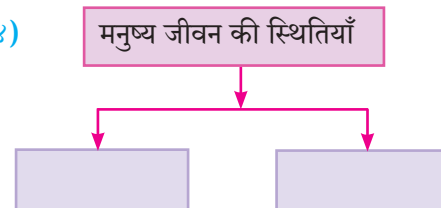
१. गली से यह नहीं दिखता -

२. लेखक ऐसी जिंदगी बिताना
नहीं चाहता -

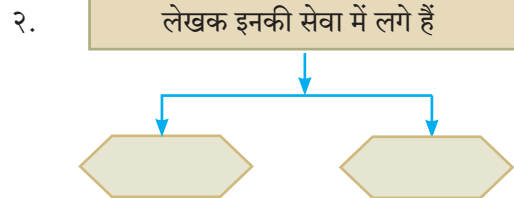
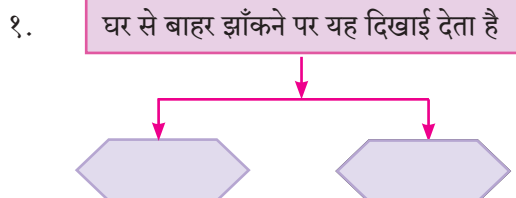
(३) आकृति में लिखिए :



(४)



(५) लिखिए :



अभिव्यक्ति

‘जो हम शौक से करना चाहते हैं, उसके लिए रास्ते निकाल लेते हैं,’ इसका सोदाहरण अर्थ लिखिए ।

(१) निम्नलिखित संधि विच्छेद की संधि कीजिए और भेद लिखिए :

अनु.	संधि विच्छेद	संधि शब्द	संधि भेद
१.	दुः+लभ	-----	-----
२.	महा+आत्मा	-----	-----
३.	अन्+आसक्त	-----	-----
४.	अंतः+चेतना	-----	-----
५.	सम्+तोष	-----	-----
६.	सदा+एव	-----	-----

(२) निम्नलिखित शब्दों का संधि विच्छेद कीजिए और भेद लिखिए :

अनु.	शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
१.	सज्जन	+	-----
२.	नमस्ते	+	-----
३.	स्वागत	+	-----
४.	दिग्दर्शक	+	-----
५.	यद्यपि	+	-----
६.	दुस्साहस	+	-----

(३) निम्नलिखित आकृति में दिए गए शब्दों का विच्छेद कीजिए और संधि का भेद लिखिए :

	विच्छेद	भेद
दिग्गज	_____ + _____	(-----)
सप्ताह	_____ + _____	(-----)
निश्चल	_____ + _____	(-----)
भानूदय	_____ + _____	(-----)
निस्संदेह	_____ + _____	(-----)
सूर्यास्त	_____ + _____	(-----)
	_____ + _____	(-----)

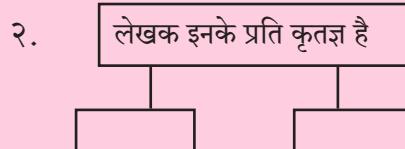
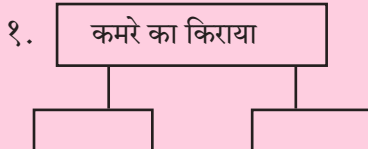
(४) पाठों में आए संधि शब्द छांटकर उनका विच्छेद कीजिए और संधि का भेद लिखिए ।

निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

हर किसी को आत्मरक्षा करनी होगी, हर किसी को अपना कर्तव्य करना होगा। मैं किसी की सहायता की प्रत्याशा नहीं करता। मैं किसी का भी प्रत्याह नहीं करता। इस दुनिया से मदद की प्रार्थना करने का मुझे कोई अधिकार नहीं है। अतीत में जिन लोगों ने मेरी मदद की है या भविष्य में भी जो लोग मेरी मदद करेंगे, मेरे प्रति उन सबकी करुणा मौजूद है, इसका दावा कभी नहीं किया जा सकता। इसीलिए मैं सभी लोगों के प्रति चिर कृतज्ञ हूँ। तुम्हारी परिस्थिति इतनी बुरी देखकर मैं बेहद चिंतित हूँ। लेकिन यह जान लो कि- 'तुमसे भी ज्यादा दुखी लोग इस संसार में हैं। मैं तुमसे भी ज्यादा बुरी परिस्थिति में हूँ। इंग्लैंड में सब कुछ के लिए मुझे अपनी ही जेब से खर्च करना पड़ता है। आमदनी कुछ भी नहीं है। लंदन में एक कमरे का किराया हर सप्ताह के लिए तीन पाउंड होता है। ऊपर से अन्य कई खर्च हैं। अपनी तकलीफों के लिए मैं किससे शिकायत करूँ ? यह मेरा अपना कर्मफल है, मुझे ही भुगतना होगा।'।

(विवेकानंद की आत्मकथा से)

(१) कृति पूर्ण कीजिए :



(२) उत्तर लिखिए :

१. परिच्छेद में उल्लिखित देश -
२. हर किसी को करना होगा -
३. लेखक की तकलीफें -
४. हर किसी को करनी होगी -

(३) निर्देशानुसार हल कीजिए :

(अ) निम्नलिखित अर्थ से मेल खाने वाला शब्द उपर्युक्त परिच्छेद से ढूँढ़कर लिखिए :

१. स्वयं की रक्षा करना -
२. दूसरों के उपकारों को मानने वाला -

(ब) लिंग पहचानकर लिखिए :

- | | | | |
|---------|----------------------|------------|----------------------|
| १. जेब | <input type="text"/> | ३. साहित्य | <input type="text"/> |
| २. दावा | <input type="text"/> | ४. सेवा | <input type="text"/> |

(४) 'कृतज्ञता' के संबंध में अपने विचार लिखिए।

